Notification No.: 557/2024

Date of Award: 09/04/2024

Name of Scholar: MD AZAM SHEIKH

Name of Supervisor: Dr. ASIF UMAR

Name of Department/Faculty: Hindi, Faculty of Humanities & Languages, JMI

Topic of Research: ADIVASI AUR GAIR-ADIVASI LEKHAKON DWARA LIKHIT HINDI KAHANIYON MEIN ADIVAASI JIVAN KA TULNATMAK ADHYAYAN

Keywords: Adivasiyat, Asmita, Bhumandlikaran, Stri, Samaj, Pryavaran.

Finding

आदिवासियत संस्कृति मनुष्य, प्रकृति एवं सम्पूर्ण जीव जंतुओं के संरक्षण की भावना को जागृत करता है। प्राकृतिक सम्पदा को लेकर आदिवासी और गैर-आदिवासी दोनों ही लेखकों की अभिव्यक्ति में रचाव बसाव की संवेदना दिखाई देती है। आदिवासी दर्शन एवं पद्धति विश्व की प्रमुख पद्धतियों में से एक है। यही कारण है कि विश्व भर के सम्पूर्ण आदिवासी लोगों की जीवन शैली लगभग एक समान प्रतीत होती है। भाषाई एवं संकृति के स्तर पर भिन्नता अवश्य है किंतु लोक प्रणाली, जीवन संघर्ष एवं समस्या एक जैसी ही है। मुख्यधारा का समाज जिस तरह प्रगति कर रहा है उसे अपने विकास की चरम अवस्था से लौट कर पुनः प्रकृति को संरक्षित करने की अवधारणा बनानी होगी। यह अवधारणा आदिवासी दर्शन से प्राप्त की जा सकता है क्योंकि आदिवासी समुदाय सदियों से प्रकृति की मौलिक संरचना में जीते आये हैं। आदिवासी समुदाय प्रकृति की संरचना एवं पारिस्थितिकी से पूर्ण रूप से अवगत है।

इस प्रकार प्रकृति के संरक्षण बोध और सौन्दर्य बोध की अवधारणा को भूमंडलीकरण के स्वरुप में भी देखा जा सकता है। एक तरफ भूमंडलीकरण की विकासवादी अवधारणा में केवल उत्पादन और उपभोक्ता के मध्य ही पूरी प्रक्रिया संचालित होती है तो दूसरी और आदिवासी समुदाय प्रकृति की मौलिक अवधारणा पर चलते हैं।